

श्रीकृष्ण षोडश कला सम्पन्न व्यक्तित्व हैं। उनके व्यक्तित्व की विशेषता है कि कोई जो श्रीकृष्ण से जुड़ा उसे लगा श्रीकृष्ण उसी के हैं। देवकी के कान्हा, राधा के प्रियतम, द्रौपदी के सखा, रुक्मिणी के पति, अर्जुन के गुरु, गोपियों के कृष्ण, सुदामा के द्वारकाधीश, श्रीकृष्ण सबके है और नहीं भी!

ये है श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व की खासियत, हर व्यक्ति से एक सम्बन्ध स्थापित कर लेते है, परन्तु इसके बाद भी श्रीकृष्ण को भली भांति जानने का कोई दावा नहीं कर सकता। एक रहस्यमय गहराई है श्रीकृष्ण में। भगवद्गीता के माध्यम से संसार को योग का संदेश देने वाले श्रीकृष्ण रास रचैया हैं, बंशी बजैया भी!

निष्काम कर्म का सिद्धान्त देने वाले श्रीकृष्ण के जीवन में रस का प्रवाह धारा प्रवाह है क्योंकि कृष्ण सम्मोहन का दूसरा नाम है। वरन जिसका नाम ही कृष्ण, श्याम, मेघवर्ण (काला) हो, उसके व्यक्तित्व में इतना प्रबल आकर्षण कहां देखने को मिलता है? यह सम्मोहन नहीं तो और क्या है?

श्री कृष्ण की भांति सम्मोहक व्यक्तित्व हर व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है। इसे प्राप्त करने के लिए वाक्शक्ति को प्रखर एवं व्यक्तित्व को प्रभावी बनाना पड़ेगा जिसके सम्मुख हर कोई नतमस्तक हो जाए और लोग आपकी बात मानने के लिए तत्पर रहें। उन्हें ऐसा लगे कि जो कुछ भी आप कहते हैं, वही सही हैं। वे आपसे जुड़ने के लिए आपके सम्मुख बातचीत करने के लिए उत्सुक रहें। ऐसा सम्मोहक व्यक्तित्व का स्वामी प्रभावशाली व्यक्तित्व बन जाता है। हर कोई उसे अपना आदर्श मानने लगता है। कार्यक्षेत्र में उनका विशेष प्रभाव हो जाता है। विपरीत लिंग के बीच वह आकर्षण का केन्द्र रहता है क्योंकि उसका हर कोई सम्मान करते है। श्रीकृष्ण समान व्यक्तित्व प्राप्त करने की का अमोघ अस्त्र है - **'श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना।'**

वृंदावन के गोपियां-गंवालें, गांववासी सभी श्रीकृष्ण के सम्मोहन-वशीकरण के अभिभूत थे। भाद्र शुक्ल पक्ष की अष्टमी अर्थात् राधाष्टमी श्रीकृष्ण की सम्मोहन-वशीकरण शक्ति को साधने का श्रेष्ठ मुहूर्त है। इसके अतिरिक्त साधक शरद पूर्णिमा की महारात्रि को भी यह साधना सम्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है। श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना का प्रारम्भ करें और 30 दिन की इस साधना को सम्पन्न कर अपने व्यक्तित्व को सम्मोहक बनाएं।

साधना विधान

श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना के लिये आपके पास तीन चीजें होनी आवश्यक हैं - **सम्मोहन-वशीकरण यंत्र, सम्मोहन-वशीकरण माला** तथा **श्रीकृष्ण तंत्र गुटिका।**

श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना को राधाष्टमी 19 सितम्बर 2026 और शरद पूर्णिमा 25 अक्टूबर 2026 के शुभ मुहूर्त अथवा **किसी भी शुभ मुहूर्त या किसी भी शुक्रवार** से प्रारम्भ किया जा सकता है।

साधना के लिए स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर लें। इत्र छिड़क लें। पीले आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठ जाएं। सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा दें।

सर्वप्रथम साधना में सफलता हेतु गुरु पूजन सम्पन्न करें। पंचोपचार गुरु पूजन सम्पन्न कर, गुरुदेव से साधना में सफलता की प्रार्थना करें।

इसके पश्चात् बाजोट पर एक ताम्र पात्र में पीले पुष्पों के आसन पर **'सम्मोहन-वशीकरण यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र के ऊपर गुटिका को रखें।

सबसे पहले गणपति का स्मरण करें -

लम्बोदराय वरदाय सुरेश्वराय,
गणपत्यै रूप मपराय भवताम सदैव:
श्रीकृष्ण मेव भवताम भवदेव नित्यं
सांदीपनाय भवताय प्रणमम गुरुत्वं।

इसके पश्चात् साधक/साधिका हाथ में जल लेकर संकल्प लें - **मैं (अमुक) पूर्ण सम्मोहन प्राप्ति हेतु सांदीपन प्रणीत यह श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना कर रहा हूं।**

और सर्वप्रथम यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराएं। फिर दूध, दही, घी, मधु तथा शक्कर से स्नान कराएं। तत्पश्चात पांचों को मिलाकर पंचामृत से स्नान कराएं। एक बार पुन: शुद्ध जल से स्नान कराएं।

इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से यंत्र को पोंछकर, बाजोट पर ही पुष्पों का आसन देकर स्थापित कर दें।

निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए यंत्र पर कुंकुम से पांच बिंदियां लगाएं -

ॐ सांदीपनाय नमः।
ॐ श्री कृष्णाय नमः।
ॐ सम्मोहन वशीकरणाय नमः।
ॐ कामदेवाय नमः।
ॐ रति प्रियायै नमः।

यंत्र से कुंकुम लेकर अपने आज्ञा चक्र पर लगाएं।

तत्पश्चात यंत्र पर दृष्टि गड़ाते हुए **सम्मोहन-वशीकरण माला** से निम्न मंत्र का 1 माला जप करें -

ॐ ह्रीं सं सम्मोहनाय वशीकरणाय फट्।।

इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती है। साधना के पश्चात् यंत्र एवं गुटिका को लाल वस्त्र में बांधकर किसी सुरक्षित स्थान या पूजा स्थान पर रख दें तथा **'सम्मोहन वशीकरण माला'** को धारण कर लें। इस माला से 30 दिनों तक नित्य उपरोक्त मंत्र की एक माला जप करनी है। मंत्र जप करके दिन भर माला को पहने रखें। एक दिन में एक माला ही जप करें क्योंकि यह बड़ा ही विस्फोटक मंत्र है और तंत्र पर आधारित है। एक दिन में एक माला मंत्र की शक्ति ही आप पचा पाएंगे।

आप पूरे महीने का भोजन एक साथ, एक बार में ग्रहण नहीं कर सकते हैं। आपका शरीर एक महीने का भोजन एक दिन में पचा भी नहीं पाता है। उसी प्रकार यह 30 दिवसीय साधना प्रतिदिन एक माला मंत्र जप कर करें।

और एक माला करेंगे तो शरीर का एक अंग खिलेगा। प्रतिदिन ऐसा होगा। शरीर के तीस अंग हैं - पन्द्रह गुप्त अंग हैं तथा पन्द्रह दृश्य अंग हैं। गुप्त अंग का अर्थ है जो अंदर ग्रंथियां हैं और दृश्य अंग आपका चेहरा, हाथ, पांव आदि।

एक-एक माला से एक-एक अंग खिलेगा। इसलिए तीस दिन तक एक-एक माला का जप करें। मंत्र जप सुबह सूर्योदय के समय या रात्रि को दस बजे के बाद करें और प्रयत्न कर उसी निश्चित समय पर जप करें।

माला मंत्र जप करने से चैतन्य हो जाएगी। तीस दिवसीय मंत्र जप की पूर्णता के पश्चात् यंत्र, गुटिका और माला को जल में विसर्जित कर दें।

तीस दिन के बाद आप अपने स्वयं का परीक्षण करें कि आपका शरीर, आपके बोलने की शक्ति, आपकी देखने की शक्ति स्वयं अद्भुत होते जा रहे हैं। लोग आपका अनुसरण करने लगेंगे कि आप कैसे चलते हैं, बोलते हैं, व्यवहार करते हैं।

यह मंत्र अपने आप में अद्भुत क्षमता युक्त है तथा पूरे शरीर को चार्ज करता है। इसलिए आप कर सकें तो साधना के बाद भी प्रतिदिन बस 11 बार यंत्र के सामने बैठकर मंत्र का उच्चारण करें। इससे निरंतरता बनी रहेगी।

यह साधना तो एक क्रियात्मक पक्ष को समेटे हुए है इसलिए करके देखें तभी एहसास होगा कि वास्तव में इसके द्वारा आप अपने क्षेत्र में अद्वितीय व्यक्ति बन सकते हैं, जीवन में पूर्ण विजय प्राप्त कर सकते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-